मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं इन्दौर जिलों के शिक्षा महाविद्यालय ग्रंथालयों की कार्यप्रणाली का अध्ययन

दिप्ती लोदवाल	डॉ. सैयद फहीम अली
(शोधार्थी)	(एसोसिएट पोफेसर)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
माधव विश्वविद्यालय, पिंड़वारा	माधव विश्वविद्यालय, पिंड़वारा
(सिरोही) राजस्थान	(सिरोही) राजस्थान

सारांश :

ग्रंथालय व्यक्ति, समुदाय एवं समाज के संर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। किसी भी संस्था का ग्रंथालय सीखने, प्रगति के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए एक बहुपयोगी मंच के रूप में कार्य करता है। ग्रंथालय से पाठक अपनी अध्ययन की प्रवृत्ति को विकसित कर ज्ञान के प्रति अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट कर सकते हैं। ग्रंथालय सभी प्रकार के पाठकों के लिए प्रमाणिक एवं विश्वसनीय स्रोत प्रदान करते हैं, वे ग्रंथालय में उपलब्ध अध्ययन सामग्री का उपयोग कर अपना अध्ययन एवं शोधकार्य पूर्ण करते हैं। ग्रंथालय बगैर किसी व्यावधान के एकल या समूहों में अध्ययन करने के लिए अत्यंत उपयोगी स्थान है। ग्रंथालय एकाग्रता के स्तर में वृद्धि करने में मददगार होते हैं। जिससे पाठक अपने अध्ययन पर अधिक कुशलता से ध्यान केंद्रित कर सकता है। ग्रंथालय की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो विद्यार्थी नवीन एवं महंगी पुस्तकें खरीदने में सक्षम नहीं होते हैं, वे ग्रंथालय में उपस्थित होकर तथा वहाँ से पुस्तकें प्राप्त कर अध्ययन कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले के 08 एवं इन्दौर जिले के 24 शिक्षा महाविद्यालय ग्रंथालयों, इस प्रकार 32 शिक्षा महाविद्यालयों के ग्रंथालयों की कार्यप्रणाली का अध्ययन किया गया है।

शब्दकुंजी : शिक्षा महाविद्यालय, शैक्षणिक ग्रंथालय, उज्जैन, इन्दौर, पाठक, ग्रंथालयाध्यक्ष।

प्रस्तावना :

जिज्ञासा मानव की मूल प्रवृत्ति है। अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही मनुष्य ज्ञान के क्षेत्र में निरंतर अग्रसर होता है। क्योंकि वह कभी भी संतुष्ट नहीं होता है उसकी जानने की आशा ओर अधिक बढ़ती जाती है वह ग्रंथालय के असिमित संग्रह से अपनी जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास कर सकता है। विकास एवं प्रगति के लिए ज्ञान एवं सूचना महत्वपूर्ण हैं, ज्ञान तथा सूचना को संरक्षित एवं प्रबंधित करने वाले ग्रंथालय

अमूल्य है। वर्तमान समाज की विशेषता व्यक्तियों कि विविध एवं जटिल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ज्ञान की प्रतिस्पर्धा, आपूर्ति तथा मांग है, जो ग्रंथालयों से अपेक्षित है। सही समय में सही पाठक अथवा उपयोगकर्ता को सही जानकारी उपलब्ध करवाना सभी ग्रंथालयों का ध्येय है। आधुनिक समाज में ग्रंथालय का उद्देश्य समुदाय को व्यापक अर्थों में शिक्षित करना है। ग्रंथालय औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास, सांस्कृतिक गतिविधियों, आध्यात्मिक एवं वैचारिक क्षेत्र तथा मनोरंजन आदि की शैक्षिक प्रक्रिया में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ग्रंथालय के प्रकार :

विभिन्न ग्रंथालयों का अपना क्षेत्र तथा उद्देश्य पृथक पृथक होता है, वह अपने विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिये अनुकूल रूप धारण करते हैं, इसी के आधार पर इसके अनेक प्रकार हो जाते हैं मुख्यतः ग्रंथालय तीन प्रकार के होते हैं– सार्वजनिक ग्रंथालय, शैक्षणिक ग्रंथालय एवं विशिष्ट ग्रंथालय।

सार्वजनिक ग्रंथालय : सार्वजनिक ग्रंथालय जनता द्वारा जनता के लिए संचालित होता है। सावैजनिक ग्रंथालय सामुदायिक खजाने हैं जो सभी उम्र तथा पृष्ठभूमि के लोगों के लिए ज्ञान और सांकृतिक संवर्धन के सुलभ केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। ये ग्रंथालय पुस्तकें, ई–पुस्तकें, ऑडियोबुक, पत्रिकाएं, समाचार पत्र तथा मल्टीमीडिया सामग्री सहित विभिन्न संसाधन प्रदान करते हैं। यहाँ बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक नागरिक उपस्थित होकर अपनी वांछित पाठ्य–सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सार्वजनिक ग्रंथालयों का लक्ष्य अपने समुदाय की विविध आवश्यकताओं एवं हितों की सेवा करना, सभी के लिये साक्षरता, शिक्षा और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देना है।

शैक्षणिक ग्रंथालय : किसी भी शैक्षणिक संस्था द्वारा संचालित ग्रंथालय, शैक्षणिक ग्रंथालय कहलाता है। शैक्षणिक संस्थानों में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं की विद्वतापूर्ण गतिविधियों का समर्थन करने में शैक्षणिक ग्रंथालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन ग्रंथालयों में अपनी पैतृक संस्था में संचालित पाठ्यक्रम को कवर करने वाली पुस्तकों, पत्रिकाओं, डेटाबेस एवं डिजिटल संसाधनों का संग्रह किया जाता है। इन ग्रंथालयों को विशिष्ट अनुभागों में व्यवस्थित किया जाता है, जिससे कि उपयोगकर्ता अपनी वांदित पाठ्य–सामग्री तक आसानी से पहूंच सके। शैक्षणिक ग्रंथालय ज्ञान की प्रगति करने, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शैक्षणिक ग्रंथालयों को विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय ग्रंथालयों में वर्गीकृत किया गया है। शोधार्थी का यह अध्ययन शैक्षणिक ग्रंथालय के स्वरूप महाविद्यालय ग्रंथालय पर केंद्रित है।

विशिष्ट ग्रंथालय : विशिष्ट ग्रंथालय संगठनों उद्योगों अथवा व्यवसायों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए स्थापित किये जाते हैं। ये ग्रंथालय निगमों, सरकारी एजेंसियों, शोध संस्थानों, कानून फर्मो, चिकित्सा सुविधाओं एवं अन्य विशिष्ट संस्थाओं में संचालित होते हैं। इन ग्रंथालयों में विशिष्ट विषय क्षेत्र अथवा क्षेत्र के अनुरूप संग्रह तैयार करते हैं।

अध्ययन का क्षेत्र : मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं इन्दौर जिले के चयनित 32 शिक्षा महाविद्यालयों के ग्रंथालयों को प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र निर्धारित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य : किसी भी कार्य को करने का उद्देश्य होता है। इसी प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य है शिक्षा महाविद्यालय की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।

प्रयुक्त शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण एवं अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है। शोधार्थी द्वारा चयनित शिक्षा महाविद्यालय ग्रंथालयों के अध्ययन हेतु दो प्रश्नावली प्रथम ग्रंथालयाध्यक्षों एवं द्वितीय पाठकों के लिये निर्मित की गयी है। स्वयं जाकर ग्रंधीालय का अवलाकन कर ग्रंथालयाध्यक्ष एवं पाठकों से पृथक–पृथक प्रश्नावलियाँ भरवाकर ग्रंथालयों से संबंधित जानकारियाँ प्राप्त की गयी हैं। प्राप्त समंको का सारणीयन कर विश्लेषण एवं व्याख्या द्वारा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की है, जिनका विवरण निम्नानुसार है–

तालिका क्रमांक 01

चयनित शिक्षा महाविद्यालय की प्रकृति

स.क्र.	विवरण	आवृत्ति
1.	शासकीय	01
2.	अशासकीय	31
	कुल योग	**32**

(स्त्रोत :– प्राथमिक आंकड़े में शिक्षा महाविद्यालय के ग्रंथालयाध्यक्ष से प्राप्त तथ्य)

उक्त तथ्यों से ज्ञात होता हैं कि उज्जैन एवं इन्दौर जिले में स्थित शिक्षा महाविद्यालयों में से कुल 32 शिक्षा महाविद्यालयों में से मात्र 01 शासकीय शिक्षा महाविद्यालय है जो कि उज्जैन में स्थित है। उसका नाम शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन है इस शिक्षा महाविद्यालय को शासन के द्वारा क्रियान्वित किया जाता है, बाकी के सभी शिक्षा महाविद्यालय 31 पूर्ण रूप से अशासकीय है जिन्हें या तो कोई प्रायवेट ट्रस्ट या फिर कोई संस्थाओं के माध्यम से संचालित किया जाता हैं।

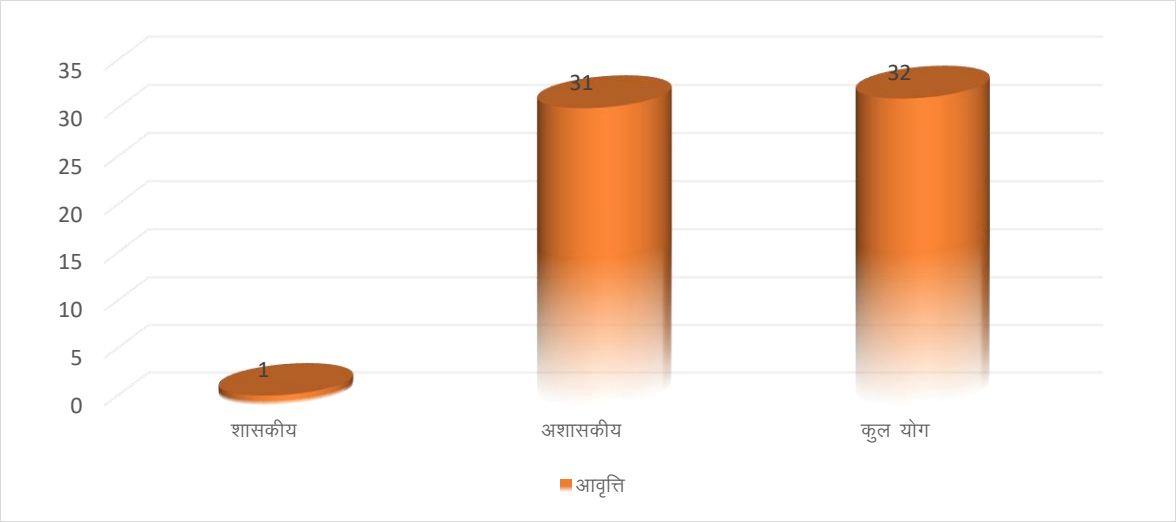

अतः कहा जा सकता हैं कि मेरे द्वारा चयनित शिक्षा महाविद्यालयों में से शासकीय शिक्षा महाविद्यालय की संख्या 01 है, बाकि के जितने भी महाविद्यालय है, वे सभी अशासकीय संस्थाओं या ट्रस्ट के माध्यम से संचालित होते है, लेकिन इन सभी 31 शिक्षा महाविद्यालयों को स्थानीय शासकीय विश्वविद्यालय अर्थात् इंदौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर एवं उज्जैन में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से संबद्धता प्रदान की गई है। इन सभी शिक्षा महाविद्यालय को संबंधित विश्वविद्यालय के द्वारा समय–समय पर दिये जा रहे निर्देशों एवं सूचनाओं का पालन करना होता है।

तालिका क्रमांक 02

महाविद्यालय ग्रंथालय में पढ़ने के लिए पाठक आते हैं या नहीं ?

स.क्र.	विवरण	आवृत्ति
1.	हाँ	29
2.	नहीं	3
	कुल योग	**32**

(स्त्रोत :– प्राथमिक आंकड़े में शिक्षा महाविद्यालय के ग्रंथालयाध्यक्ष से प्राप्त तथ्य)

च्यनित शिक्षा महाविद्यालय के ग्रंथालयाध्यक्षों से प्राप्त समंको से ज्ञात हुआ कि पाठक ग्रंथालय की समय सारणी के अनुसार ग्रंथालय में पढ़ने के लिए आते हैं, इस तथ्य को मानने वाले महाविद्यालय की संख्या 29 है, लेकिन 03 ग्रंथालयाध्यक्ष के अनुसार उनके महाविद्यालय के विद्यार्थी केवल ग्रंथालय से पाठ्य सामग्री घर ले जाने के लिए प्राप्त करने आते हैं।

अतः कहा जा सकता हैं कि उज्जैन एवं इंदौर के शिक्षा महाविद्यालय में अधिकतर महाविद्यालय के ग्रंथालय में पाठक पढ़ने के लिए आते हैं।

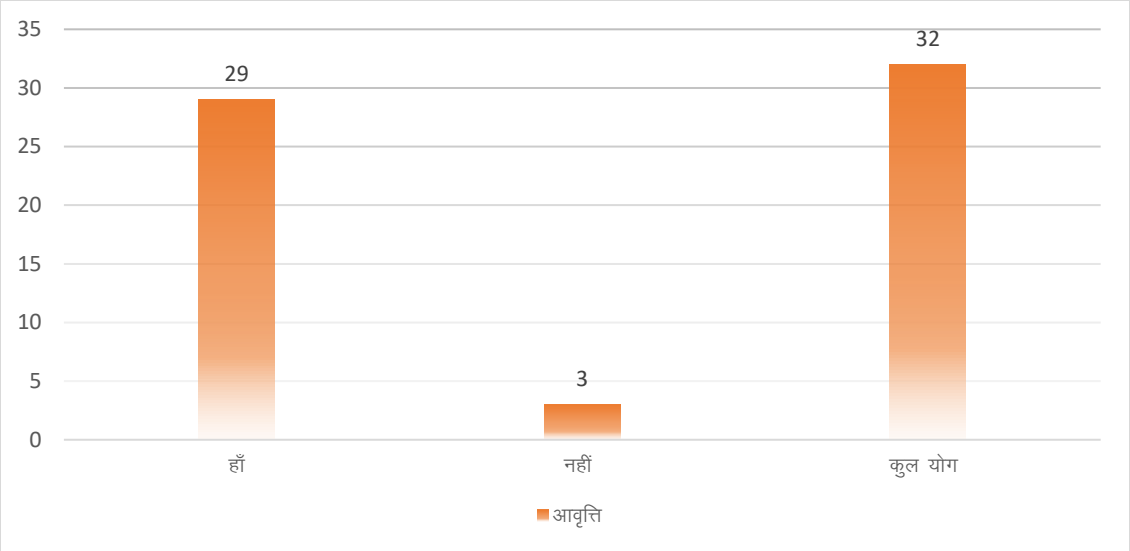

अधिकांश शिक्षा महाविद्यालय के ग्रंथालय में पढ़ने के लिए अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राऐं जाते हैं, इस कारण से मेरे द्वारा ग्रंथालयाध्यक्ष से ग्रंथालय में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के बारे में जानकारी प्राप्त की गई हैं।

तालिका क्रमांक 03

पुस्तक परिसंचरण की कौन सी पद्वति का उपयोग किया जाता हैं ?

स.क्र.	विवरण	आवृत्ति
1.	मुक्त द्वार प्रणाली	12
2.	अमुक्त द्वार प्रणाली	09
3.	अर्द्धमुक्त द्वार प्रणाली	11
	कुल योग	**32**

(स्त्रोत :– प्राथमिक आंकड़े में शिक्षा महाविद्यालय के ग्रंथालयाध्यक्ष से प्राप्त तथ्य)

ग्रंथालय के द्वारा पुस्तकें आदान प्रदान करते समय कई प्रकार की सावधानी रखते है, इस कारण से उन्हें पृथ्क–पृथक प्रणालियों का उपयोग किया जाता हैं, जिसमें मुक्त द्वार प्रणाली का उपयोग करने वाले महाविद्यालय की संख्या 12 है, अमुक्त द्वार प्रणाली का उपयोग करने वाले महाविद्यालय की संख्या 09 है, अर्द्धमुक्त द्वार प्रणाली का उपयोग करने वाले महाविद्यालय की संख्या 11 है।

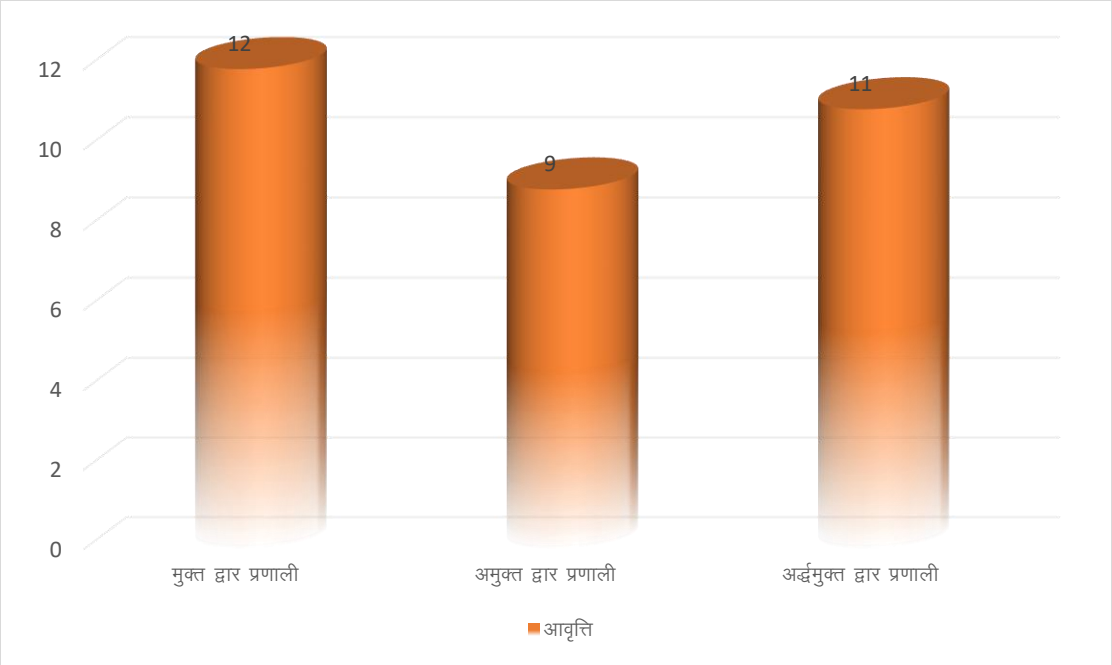

किसी भी ग्रंथालय में पुस्तकों के आदान प्रदान में कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाना चाहिये, ताकि उनकी जानकारी ग्रंथालयाध्यक्ष को आसानी से रहे।

तालिका क्रमांक 04

पुस्तकों की आदान–प्रदान कान सी प्रणाली अपनाई जाती है?

स.क्र.	विवरण	आवृत्ति
1.	कम्प्यूटरीकृत	14
2.	अकम्प्यूटरीकृत	11
3.	उपरोक्त दोनों	7
	कुल योग	**32**

(स्त्रोत :– प्राथमिक आंकड़े में शिक्षा महाविद्यालय के ग्रंथालयाध्यक्ष से प्राप्त तथ्य)

वर्तमान समय तकनीकियों का उपयोग करने वाला समय है, इस कारण से पुस्तकों के आदान प्रदान प्रणाली में कप्यूटरीकृत प्रणाली का उपयोग करने वाले महाविद्यालय की संख्या 14 है, अकम्प्यूटरीकृत प्रणाली का उपयोग करने वाले महाविद्यालयों की संख्या 11 है एवं दोनों प्रणाली का उपयोग करने वाले महाविद्यालय की संख्या 7 है।

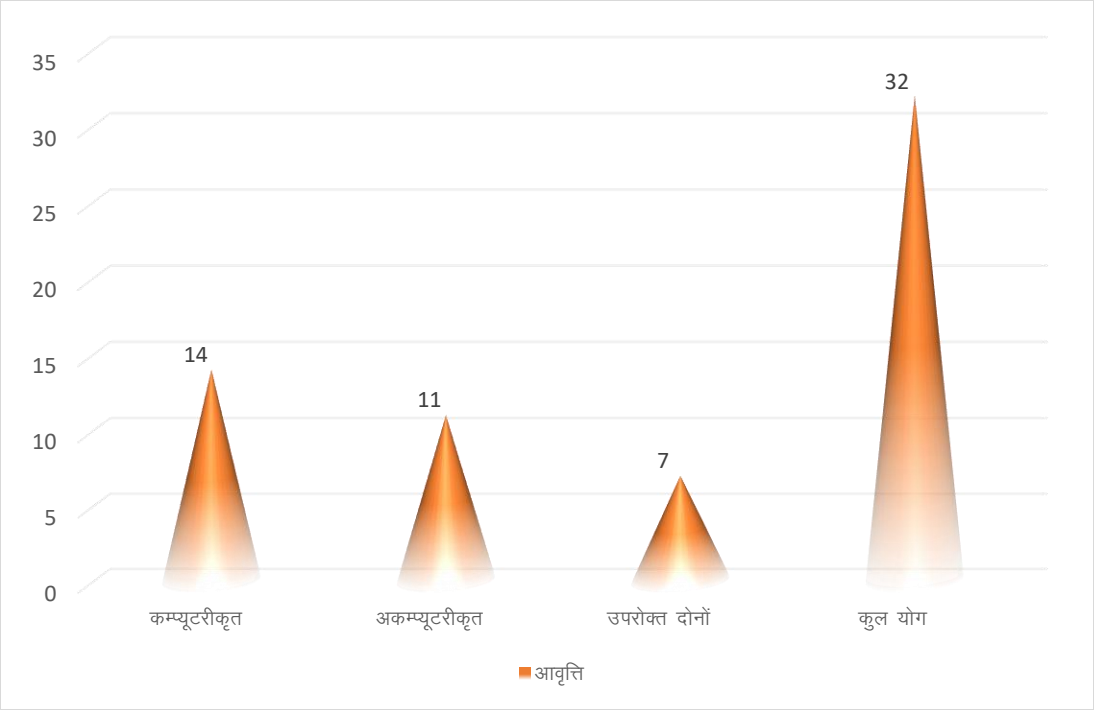

संदर्भ सूची :

1. लाल, सी. और कुमार, के. (2010). ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान : विवरणत्मक प्रश्न. नईदिल्ली, एस. एस. पब्लिकेशन.
2. पाटीदार, अमित कुमार (2002). मध्यप्रदेश के शिक्षा महाविद्यालयों में ग्रंथालय सेवाएं : एक समीक्षात्मक अध्ययन. (शोधप्रबंध) उज्जैन, विक्रम विश्वविद्यालय.
3. https://www.lisedunetwork.com
4. https://www.librarysciencemadeeasy.blogspot.com
5. https://ccsuniversity.ac.in